महाभारत में गौ महात्म्य

डॉ० विवेक शर्मा

सहायकाचार्य, संस्कृत विभाग,

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

(सार)

गौ हमारी संस्कृति का प्रतीक है। लेकिन वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात करें तो निसन्देह गाय के प्रति हमारे समाज का दृष्टिकोण उदासीन हुआ है। गाय को घास खिलाने की आदर युक्त सुन्दर विधि को प्रतिपादित करते हुये कहा गया है -

गावो मे मातरः सर्वाः पितरश्चैव गोवृषाः।
ग्रासमुष्टिं मया दत्तं प्रतिगृह्णीत मातरः।

गाय में कई देवताओं का निवास बताया गया है। गाय को शुद्धता का प्रतीक सिद्ध करते हुये कहा गया है कि सभा भवन, घर मन्दिर आदि गोबर के लेप से ही शुद्ध होते हैं। गौ के मूत्र तथा गोबर को भी संस्कृत वाङ्मय में पर्याप्त महत्त्व दिया गया है। आदर्श हिन्दू परिवार से यह अपेक्षा की जाती है कि उसके घर में गाय अवश्य हो। हमारे जीवन और मृत्यु के मध्य सभी धार्मिक क्रियायें गोमूत्र और गोमय के बिना अपूर्ण हैं। लेकिन दुःख की बात है कि शास्त्रों में गाय की इतनी उदात्त महिमा होने के बावजूद भी आज का भारतीय समाज महाभारत के इस उदात्त चिन्तन से दूर हुआ, तभी गौओं का निरादर करने लगा। आज का पढ़ा लिखा समाज गाय को पालने के स्थान पर कुत्तों को पालता है। जिस पर आज के समय में चिन्तन करने की आवश्यकता है। हिन्दु संस्कृति में शुभाशुभ कार्यों में पवित्रता के सम्पादनार्थ गोबरलेप को विशेष महत्त्व प्रदान किया जाता है।

मुख्य शब्द –

गौ, माता, गोदान, संस्कृति, हिन्दु, महाभारत, पवित्र, गोमय, गोमूत्र, पञ्चगव्य, गोसंरक्षण, कल्याण, अमूल्य धरोहर।

गौ हमारी संस्कृति का प्रतीक है। गाय की महिमा अनन्त है। गाय में दिव्य एवं महान् तेज़ है, अतः इसके दान की प्रशंसा की जाती है। जो व्यक्ति ईर्ष्या त्याग कर इसका दान करता है, वह

पुण्यात्मा कहलाता है[1] । वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात करें तो निसन्देह गाय के प्रति हमारे समाज का दृष्टिकोण उदासीन हुआ है । लेकिन फिर भी ग्रामीण परिवेष में अभी गाय सम्माननीया है । इसका कारण है कि महाभारत सदृश कालजयी ग्रन्थों में मुक्त कण्ठ से गाय की महिमा को व्याख्यायित किया गया है ।

भारत एक कृषि प्रधान देश है एवं गाँव में बसने वाला किसान अपनी कृषि और अपने भरण पोषण के लिये पूर्णतः गाय पर निर्भर है, इसलिये महाभारत में कहा जाता है कि गाय अपने दूध-दहीं से सबका पौषण करती हैं और गाय का पुत्र खेती का कार्य कर धान्य को उत्पन्न करते हैं[2] । गाय की खाद भी खेती के लिये सर्वोत्तम है, इसलिये गाय को अन्न की प्राप्ति का कारक बतलाया गया है[3] । गाय को समस्त प्राणियों का आधार एवं मङ्गल की निधि बतलाया गया है[4] । साथ ही गौओं की सेवा का महत्त्व बतलाते हुये कहा गया है कि जो गौओं की सेवा करता है एवं उनका सर्वदा अनुगमन करता है उसे संसार के अत्यन्त दर्लभ वर प्राप्त होते हैं[5] । महाभारत का यह सुन्दर निर्देश रघुवंशम् की गौभक्ति से साम्य रखता है जहाँ कहा गया है –

प्रस्थितायां प्रतिष्ठेथाः स्थितायां स्थितिमाचरेः ।
निषण्णायां निषीदास्यां पीताम्भसि पिबेरपः[6] ।

इस सुन्दर श्लोक का भाव यह है कि परम चक्रवर्ती राजा दिलीप को गाय की सेवा हेतु निर्देशित करते हुए महर्षि वशिष्ठ ने कहा कि हे राजन ! तुम्हें इस नन्दिनी की इस तरह सेवा करनी है कि इसके चलने पर तुम भी इसके पीछे-पीछे चलो, ठहरने पर ठहरो, बैठने पर बैठो और पानी पीने पर पानी पियो अर्थात हर क्षण तुम्हें इसकी सेवा में तत्पर रहना है । महाभारत स्पष्ट निर्देश करता है कि गाय को खेत में और रास्ते में भार ढोने के लिये कभी भी जोता न जाये[7] । आगे महाभारत में कहा गया है कि जो व्यक्ति जितेन्द्रिय एवं प्रसन्नचित्त होकर गौओं की सेवा करता है, वह समृद्धि को प्राप्त करता है[8] । गौ सेवा से पुत्रेच्छु को पुत्र, धनेच्छु को धन और गुणी / सुशील पति चाहने वाली स्त्री को उसका मनोनुकूल पति प्राप्त होता है अर्थात् गौओं की आराधना से मनुष्य अपनी सम्पूर्ण कामनाओं को प्राप्त कर लेता है, क्योंकि गौएँ सरलता से सन्तुष्ट होकर सभी वर प्रदान करती हैं[9] । ये गाय अपने भक्त को पुत्र, कन्या, धर्म, विद्या, सुख प्रदान करने वालीं हैं –

पुत्रार्थी लभते पुत्रं कन्यार्थी तामवाप्नुयात् ।
धनार्थी लभते वित्तं धर्मार्थी धर्ममाप्नुयात् ।।

विद्यार्थी चाप्नुयाद् विद्यां सुखार्थी प्राप्नुयात् सुखम् ।
न किंचिद् दुर्लभं चैव गवां भक्तस्य भारत[10] ।।

गोदान को हमारी संस्कृति में महादान माना गया है । गोदान के विषय में भीष्म युधिष्ठिर से कहते हैं कि गोदान करने से सुखमय ऐश्वर्यशाली लोकों की प्राप्ति होती है[11] । इसके अतिरिक्त कहा गया है कि गाय के दान मात्र से ही यज्ञों का फल प्राप्त होने के साथ - साथ मोक्ष भी प्राप्त होती है[12]। अतः मुमुक्षु गोदान करे[13] ।

गाय को घास खिलाने की आदर युक्त सुन्दर विधि को प्रतिपादित करते हुये महाभारत में कहा गया है -

गावो मे मातरः सर्वाः पितरश्चैव गोवृषाः ।
ग्रासमुष्टिं मया दत्तं प्रतिगृह्णीत मातरः[14] ।

अर्थात् गौएँ मेरी मातायें और वृषभ मेरे पिता हैं । हे गौ माता मै तुम्हारी सेवा में मुट्ठी भर घास अर्पण कर रहा हूँ, कृपया इसे स्वीकार करें । महाभारत में कहा गया है कि गाय का नाम संकीर्तन किये बिना शयन नहीं करना चाहिये, एवं प्रातः उठने पर उसी का स्मरण करना चाहिये । सर्वदा गाय को नमस्कार करना चाहिये[15] । गाय इतनी पूजनीया है कि महाभारत में निर्देशित किया गया है कि गौओं के सभी नामों को संयमित रहकर प्रतिदिन जपना चाहिये[16] । आगे महाभारतकार कहते हैं कि तीन दिन तक उपवास में रहकर गाय का पूजन करना चाहिये[17] ।

महाभारत में कई स्थानों पर गाय को माता कहा गया है[18] । महाभारत में गौ से प्रार्थना की गई है कि वह अपने बच्चे के समान माँ बनकर हमें आश्रय प्रदान करे[19] । अन्यत्र भी कहा गया है कि बैल जगत् के पिता तथा गौएँ समस्त संसार की माता होती हैं । गाय के पूजन से समस्त देवों की पूजा हो जाती है[20] ।

गाय में कई देवताओं का निवास बताया गया है । गाय के सींगो के ऊपरी भाग में विष्णु और इन्द्र निवास करते हैं[21] । सींगो की जड़ में चन्द्रमा और व्रजधारी इन्द्र रहते हैं । सींगों के बीच में ब्रह्मा तथा ललाट में महादेव रहते हैं[22] । दोनों कानों में अश्विनीकुमार, नेत्रों में चन्द्रमा और सूर्य, दांतो में मरुद्गण, जीह्वा में सरस्वती, रोम कूप में मुनिगण, त्वचा में प्रजापति एवं श्वासों में षडङ्ग विद्या तथा चारों वेद निवास करते हैं[23] । नासिका छिद्रों में गन्ध और सुगन्धित पुष्प, नीचे के ओंठों में सब वसुगण तथा मुख में अग्नि निवास करती हैं[24] । गाय के कक्ष में साध्य देवता, गर्दन में पार्वती, पीठ पर नक्षत्र, कुकुद में आकाश, अपान में सारे तीर्थ, मूत्र में गङ्गा, तथा गोबर में साक्षात् लक्ष्मी

वास करती हैं[25] । बाह्य नासिका में ज्येष्ठा देवी, नितम्बों में पितर एवं पूंछ में भगवती रमा निवास करती हैं[26] । दोनों पसलियों में विश्वेदेव तथा छाती में कार्तिकेय हैं[27] । घुटनों और ऊरुओं में पञ्च वायु, खुर मध्य में गन्धर्व तथा खुर के अग्रभाग में सर्प निवास करते हैं[28] । जल से परिपूर्ण चारों समुद्र गाय के स्तन हैं[29] । इसलिये ही शास्त्रों में कहा गया है कि गाय के पूजन से सभी देवताओं का पूजन हो जाता है । सभी देवता, पितर, गन्धर्व, अप्सरायें, लोक, द्वीप, समुद्र, गङ्गा आदि नदियाँ तथा वेद नाना विध मन्त्रों से कपिला गाय की प्रसन्नतापूर्वक स्तुति करते हैं, विद्याधर, सिद्ध, भूतगण एवं तारागण गाय की स्तुति में नृत्य करते हैं[30] । भगवान् शङ्कर सर्वदा गौओं के साथ रहते हैं[31] ।

महाभारत में निर्देशित किया गया है कि भोजन ग्रहण से पूर्व न्यूनातिन्यून एक वर्ष तक प्रतिदिन किसी दूसरे की गाय को घास खिलाना चाहिये[32] । महाभारत में इस तथ्य के द्वारा अपनी पालतू गायों के अतिरिक्त अन्य गायों के प्रति संवेदनशीलता का निर्देश किया गया है । किन्तु वर्तमान समय में गौवंश को खेतों से मार मार भगाया जा रहा है, सड़कों पर उनको निर्दयता से पीटा जा रहा है । मनुष्य का गायों के प्रति ऐसा व्यवहार महाभारत वर्णित गौ व्यवहार से बिल्कुल विपरीत है, क्योंकि महाभारत में कहा गया है कि गौओं के साथ कभी मन से भी द्रोह नहीं करना चाहिये । महाभारत हमें निर्देशित करता है कि गाय से साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिये, जिससे उसे सुख प्राप्त हो । गाय का उचित सत्कार करना चाहिये और नमस्कार आदि के द्वारा उसका पूजन करना चाहिये[33] । गाय की भक्ति सम्बद्ध बहुत ही सुन्दर श्लोक महाभारत में प्राप्त होता है, जो गाय के प्रति पूर्ण समर्पण के भाव को प्रतिपादित करता है –

गावो ममाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठत एव च ।
गावो मे सर्वतश्चैव गवां मध्ये वसाम्यहम्[34] ।।

अर्थात् गाय मेरे आगे रहे, मेरे पीछे भी गाये रहे, मेरे सभी ओर गाय स्थित रहे और गौओं के मध्य मैं निवास करूँ । साथ ही कहा गया है कि गौओं का कभी तिरस्कार नहीं करना चाहिये[35] । ऋषि ये प्रार्थना करता है कि मैं सर्वदा गाय के दर्शन करूँ, जहाँ गाय रहें वहीं मेरा निवास हो[36] । गाय के दर्शन मात्र से सभी पापों का नाश हो जाता है[37] । गाय की रँभाने की ध्वनि सुनकर ही कई पापो का नाश होता है[38] । इसलिये ही आदर्श हिन्दू परिवार से यह अपेक्षा की जाती है कि उसके घर में गाय अवश्य हो । लेकिन दुःख की बात है कि आज का भारतीय समाज महाभारत के इस उदात्त चिन्तन से दूर हुआ, तभी गौओं का निरादर करने लगा । आज का पढ़ा

लिखा समाज गाय को पालने के स्थान पर कुत्तों को पालता है। जिस पर आज के समय में चिन्तन करने की आवश्यकता है।

गौओं के मध्य निवास को पवित्र सिद्ध करते हुये निर्देशित किया गया है कि गौओं के शरीर से कई प्रकार की सुगन्ध निकलती हैं, जबकि बहुत सी गायें गुग्गल के समान सुगन्ध प्रदान करती हैं[39]। गौओं के बीच में जाकर गोमती मन्त्र का जप करने वाला अत्यन्त निर्मल एवं शुद्ध हो जाता है[40]। गाय इस संसार में सर्वाधिक पवित्र है इसलिये उसका स्पर्श सर्वदा करना चाहिये[41]। इसी लिये गाय का यशोगान गाते हुये कहा गया है कि गाय परम पावन पवित्र है, पुण्यप्रदात्री है और महान् देवता है। विद्वानों को इसका दान करना चाहिये –

गावः पवित्राः पुण्याश्च पावनं परमं महत्।
ताश्च दत्त्वा द्विजातिभ्यो नरः स्वर्गमुपाश्नुते[42]।।

महाभारत में लक्ष्मी संवाद में स्वयं लक्ष्मी ने कहा है कि गाय के शरीर में कोई ऐसा स्थान नहीं है जो अपवित्र हो अतः गाय पवित्र एवं सौभाग्यशालिनी है[43]। गाय को तीनों लोकों सर्वाधिक पवित्र एवं सर्वश्रेष्ठ बतलाया गया है –

न हि पुण्यतमं किंचिद् गोभ्यो भरतसत्तम।
एताः पुण्याः पवित्राश्च त्रिषु लोकेषु सत्तमाः[44]।।

गाय को शुद्धता का प्रतीक सिद्ध करते हुये कहा गया है कि सभा भवन, घर मन्दिर आदि गोबर के लेप से ही शुद्ध होते हैं[45]। गौ के मूत्र तथा गोबर को भी संस्कृत वाङ्मय में पर्याप्त महत्त्व दिया गया है। गौमूत्र सेवन के विषय में महाभारत में एक विशेष क्रम बताते हुये कहा गया है कि न्यूनतम तीन दिन तक ऊष्ण गोमूत्र का सेवन करना चाहिये, इसके बाद तीन दिन तक गरम गोदुग्ध पीना है[46]। उसके उपरान्त तीन दिन गोघृत लें एवं इसके पश्चात् तीन दिन तक वायु मात्र का सेवन करना चाहिये[47]। गौएँ अपने दूध के द्वारा समस्त संसार का पालन करती हैं[48]। महाभारत में बतलाया गया है कि गोरस के बढ़कर कोई वस्तु नहीं है, अर्थात् उपवास करना चाहिये[49]।

गो दुग्ध के विषय में महाभारत में सुन्दर कथा प्रस्तुत की गई है जिसमें बताया गया है कि एक बार सुरभि का एक बछड़ा दूध पी रहा था, दूध पीते बछड़े का फेन महादेव शिव के मस्तक पर गिरा जिससे वे अत्यन्त कुपित होकर सब कुछ भस्म करने को उद्यत हुये[50]। फिर दक्ष प्रजापति ने कहा कि हे महादेव ! आपके ऊपर जो दूध का छींटा पड़ा है, वह अमृत समान है। क्योंकि **बछड़े द्वारा गौ का दूध पीने से दूध कभी भी जूठा नहीं होता, दूध तो अपने आप में ही अमृत है**। इस

कथा में दूध को अमृत तुल्य बतलाया गया है[51] । दूध इत्यादि का पूजा में विशेष महत्त्व है, दूध से शङ्कर, दहीं से तैतींस देवता एवं घी से अग्निदेव तृप्त होते हैं[52] । घी के विषय में महाभारत में कहा गया है कि –

येन देवाः पवित्रेण भुञ्जते लोकमुत्तमम् ।
यत् पवित्रं पवित्राणां तद् घृतं शिरसा वहेत्[53] ।।

अर्थात् जिस घी को देवताओं ने पवित्र माना है, वह सभी वस्तुओं में पवित्रतम है । यह घी शिरोधार्य है । आगे घी की महिमा का यशोगान करते हुये महाभारतकार कहते हैं कि गोघृत से ही आहुति देनी चाहिये, घी की दक्षिणा ब्राह्मण को देनी चाहिये, भोजन में भी गोघृत प्रदान करना चाहिये । घृत के कारण ही गौओं की समृद्धि का अनुभव होता है । घी का दान करना चाहिये एवं स्वयं भी घी का ही सेवन करना चाहिये[54] । यज्ञ हवि की ओर सङ्केत करते हुये कहा गया है कि गाय के ही कारण देवताओं को उत्तम हविष्य प्राप्त होता है[55], अतः परम सौभाग्य की प्रतीक ये गौएँ यज्ञ का प्रधान अङ्ग हैं, जिनसे बढ़कर इस संसार में कुछ नहीं[56] । ऐसा इसलिये क्योकि शास्त्रों में लिखा गया है कि दूध, दहीं और घृत के बिना यज्ञ न ही संभव है एवं न ही साफल्य को प्राप्त होता है, अतः गौ घृत यज्ञ का मूल एवं साक्षात् यज्ञ स्वरूपा हैं[57] । इसी कारण से यज्ञ को गौ में ही प्रतिष्ठित बतलाया गया है –

गावो यज्ञस्य हि फलं गोषु यज्ञाः प्रतिष्ठिताः ।
गावो भविष्यं भूतं च गोषु यज्ञाः प्रतिष्ठिताः[58] ।।

अतः स्पष्ट है कि यज्ञ जो हमारी वैदिक संस्कृति के प्रत्यक्ष द्योतक हैं, वे गाय के बिना संभव ही नहीं है । और अगर आने वाले समय में गाय का संरक्षण न किया गया तो यज्ञ संस्कृति भी स्वयमेव समाप्त हो जायेगी । दूध के अतिरिक्त गोमय एवं गोमूत्र के विषय में महाभारत में स्पष्टतया बतलाया गया है कि "**गवां मूत्रपुरीषस्य नोद्विजेत कदाचन[59]**" अर्थात् गोमूत्र तथा गोबर कभी भी घृणा नहीं करनी चाहिये । इसके अतिरिक्त महाभारत में तो यहाँ तक वर्णन किया गया है कि "**गोमयेन सदा स्नायाद् गोकरीषे च संविषेत[60]**" अर्थात् प्रतिदिन शरीर में गोबर लगाकर स्नान करना चहिये । साथ ही कहा गया है कि गोबर उपयोगी है इसलिये इस पर कभी मलत्याग नहीं करना चाहिये एवं इस पर कभी थूकना भी नहीं चाहिये[61] । पञ्चगव्य की हमारी संस्कृति में इतना महत्त्व है कि विवाह, जन्मदिवस इत्यादि शुभकार्यों में इससे स्नान किया जाता है, यहाँ तक कि किसी की मृत्यु होने पर दशम दिवस में घर का शुद्धिकरण भी पञ्चगव्य से किया

जाता है। अतः स्पष्ट है कि हमारे जीवन और मृत्यु के मध्य सभी धार्मिक क्रियायें गोमूत्र और गोमय के बिना अपूर्ण हैं। इसलिये ही महाभारत में कहा गया है कि पञ्चगव्य से स्नान करने वाले को गङ्गा स्नान का फल प्राप्त हो जाता है[62]। कहा गया है कि क्रोध और असत्य को त्याग कर पञ्चगव्य के सेवन से अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है[63]। महाभारत में गोबर और गोमूत्र गाय के इन दो पवित्र अवयवों में लक्ष्मी का निवास बतलाया गया है[64]। प्राचीन शास्त्रों में गाय को विश्व का सबसे पवित्र पशु कहा गया है। यथा गौ के सन्दर्भ में उल्लेख प्राप्त होता है कि -

तस्याः खुरन्यासपवित्रपांसुमपांसुलानां धुरि कीर्त्तनीया।
मार्गे मनुष्येश्वरधर्मपत्नी श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्[65]।।

रघुवंश के इसी तथ्य पर ही यदि विचार करें तो यहाँ बतलाया गया है कि जहाँ गौ माता के खुरों का स्पर्श भी होता है, वह स्थान पवित्र हो जाता है। यह बात आज के इस वैज्ञानिक युग में भी पूरी तरह प्रासङ्गिक है। आज भी यह कई वैज्ञानिक प्रमाणों से प्रमाणित हो गया है कि ताजा गोबर मलेरिया के परजीवी और क्षयरोग के रोगाणु खत्म करता है। इसी कारण हिन्दु संस्कृति में शुभाशुभ कार्यों में पवित्रता के सम्पादनार्थ गोबरलेप को विशेष महत्त्व प्रदान किया जाता है।

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि गाय हमारी सभी इच्छाओं को पूरा करने वाली है, यह आज आधुनिक विज्ञान द्वारा प्रमाणित किया जा रहा है। अब तक तो पञ्चगव्य (दुग्ध-घृत-दधि-गोमूत्र-गोमय) के औषधीय गुणों का प्रमाणीकरण IICT, NBRI, CSIR, IIT, NEERI, NBAGR जैसे भारत सर्वकार के प्रतिष्ठित उपक्रमों द्वारा किया ही गया था, साथ ही कुछ समय पूर्व जूनागढ कृषि विश्वविद्यालय की फूड ट्रेडिंग लैब में बायोटेकनोलोजी के तत्कालीन विभागाध्यक्ष डॉ० बी एन गोलकिया की अध्यक्षता में ४०० गिर नस्ल की गायों के मूत्र की जाँच की गई जिसमें प्रमाणित किया गया कि गिर नस्ल की गाय के प्रत्येक एक लीटर गौमूत्र में दस मिलीलिटर गोल्ड साल्ट है[66]। शोध में निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि गौमूत्र में सोने के अतिरिक्त ५०० अन्य कम्पाउण्ड भी हैं। जिनसे लगभग ३८८ बीमारियाँ ठीक होती हैं। इस नूतन तथ्य ने संस्कृत के उस तथ्य को और भी पुष्ट कर दिया गया है, जिसमें कहा गया है कि यह गौ रूपी धन उपेक्षा करने योग्य नहीं है, अपितु ये सम्मान योग्या है -

गुरोरपीदं धनमाहिताग्नेर्नश्यत्पुरस्तादनुपेक्षणीयम्[67]।।

इस शोध के बाद आधुनिक समाज को भी रघुवंश महाकाव्य की यह बात तथ्यात्मक लगेगी जिसमें कहा गया है कि गाय तो पूज्या है, जिसके पूजन को न करना अपने भावी कल्याण को रोकना है –

प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्य पूजा व्यतिक्रमः[68]।

साथ ही शास्त्रों के इस कथन से कोई भी असहमत नहीं होगा कि गाय की सेवा करने का अर्थ है कि अपने आने वाले समय में अपनी सिद्धि को निश्चित करना[69]।

इन सब विशेषताओं के कारण गाय के बारे में कई अन्य ग्रन्थों में भी स्फुटतया कहा गया है कि गाय मात्र दूध देने वाला पशु नहीं अपितु सभी अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाली कामधेनु है –

न केवलानां पयसां प्रसूतिमवहि मां कामदुधां प्रसन्नाम्[70]।

समाज गाय के प्रति और अधिक सम्वेदनशील बने इस के लिये आवश्यकता है कि सम्पूर्ण समाज को गौवंश की सभी उपयोगिताओं को समझना एवं समझाना होगा। पूर्व समय में गाय हमारे समाज के लिये न केवल यज्ञ श्राद्ध का अपितु भोजन प्राप्ति का प्रमुख साधन थी, जिसके प्रमाण संस्कृत वाङ्मय में स्फुटतया दृष्टिगोचर होते हैं -

तां देवतापित्रतिथिक्रियाऽर्थामन्वग्ययौ[71]॥

अतः यह बात तो सिद्ध हो गई है कि ठोस प्रमाणों के आधार पर ही संस्कृत वाङ्मय में गौ की महिमा का यशोगान गाया गया है। एवं गाय की उपयोगिता सम्बद्ध तथ्यों को जानने वाले ऋषि मुनियों ने गाय को अमुल्य धरोहर मानते हुए पूज्या माना। गाय पूज्या होगी तभी गाय हमारे देश में बच पायेगी एवं संरक्षित रहेगी।

निष्कर्ष –

हमारे देश में गाय को माता का स्थान प्रदान किया गया है। कई बार ये मांग भी उठाई जाती है कि गाय को राष्ट्रिय पशु भी घोषित किया जाना चाहिये। इसका कारण है कि गाय न केवल एक पशु है अपितु गाय हमारी संस्कृति का अभिन्न अङ्ग है। गाय के बिना हम अपनी संस्कृति को भली प्रकार से समझ नहीं सकते। लेकिन वास्तविकता यह भी है कि गाय का हमारे ही समाज में निरादर हो रहा है। उसका कुछ हद तक कारण है कि हमारी वर्तमान पीढ़ी गौ माता के महत्त्व से अनभिज्ञ है। गाय के बारे में जो भी हमारे शास्त्रों में वर्णित किया गया है उससे हमारी युवा पीढ़ी को अवगत करवाना नितान्त आवश्यक है। गाय के विषय में ऐसा ही विराट वर्णन महाभारत में

विद्यमान है । जिसे हमे भी सूक्ष्मता से पढ़कर आने वाली पीढ़ी को प्रदान करना होगा । तभी हमारी गाय माता के स्थान पर वास्तविक रूप से विराजमान होगी ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- महाभारत (षष्ठ खण्ड) अनुशासन – स्वर्गारोहण, कोड - 37 महर्षि वेदव्यास, गीताप्रेस गोरखपुर ।
- रघुवंशमहाकाव्यम्, पं० ब्रह्मशङ्कर मिश्रः साहित्यशास्त्री, चौखम्बा संस्कृति सीरिज आफिस, बनारस - १
- पद्मपुराणम्, सम्पादक - प० वेदमूर्ति तपोनिष्ठ श्री राम शर्मा आचार्य, डॉ चमन लाल गौतम, संस्कति संस्थान बरेली (उ०प्र०), संशोधित संस्करण, १९७३
- नारदपुराणम्, सम्पादक : प० वेदमूर्ति तपोनिष्ठ श्री राम शर्मा आचार्य, डा० चमन लाल गौतम, संस्कृति संस्थान बरेली (उ० प्र०), संशोधित संस्करण, १९७२
- ब्रह्मपुराणम्, सम्पादक : प० वेदमूर्ति तपोनिष्ठ श्री राम शर्मा आचार्य, डा० चमन लाल गौतम, संस्कृति संस्थान बरेली (उ० प्र०), संशोधित संस्करण, १९७४
- पुराणविमर्श, लेखक : बलदेव उपाध्याय, प्रकाशक : चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, प्रथम संस्करण, १९६५
- पौराणिक कोश, लेखक : राणाप्रसाद शर्मा, प्रकाशक : ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी – १, प्रथम संस्करण

---

1 गावस्तेजो महद् दिव्यं गवां दानं प्रशस्यते । ये चैताः सम्प्रयच्छन्ति साधवो वीतमत्सराः । महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/१७

2 धारयन्ति प्रजाश्चैव पयसा हविषा तथा । एतासां तनयास्चापि कृषियोगमुपासते ॥ जनयन्ति च धान्यानि बीजानि विविधानि च ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८३/१८-१९

3 अन्नं हि परमं गावो ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७८/०७

4 गावः प्रतिष्ठा भूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत् । महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७८/०५

5 गाश्च शुश्रूषते यश्च समन्वेति च सर्वशः । तस्मै तुष्टाः प्रयच्छन्ति वरानपि सुदुर्लभान् ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/३३

6 रघुवंशम्, १/८९

7 न वाहयेच्च कपिलां क्षेत्रे वाध्वनि वा द्विजः ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०४०, श्लोकक्रमाङ्कः २

8 दान्तः प्रीतमना नित्यं गवां व्युष्टिं तथाश्नुते । त्र्यहमुष्णं पिबेन्मूत्रं त्र्यहमुष्णं पिबेत् पयः ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/३५

9 पुत्रकामश्च लभते पुत्रं धनमथापि वा । पतिकामा च भर्तारं सर्वकामांश्च मानवः । गावस्तुष्टाः प्रयच्छन्ति सेविता वै न संशयः । महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/४५

10 महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८३/५१-५२

11 उपक्रीडन्ति तान् राजन् शुभाश्चाप्सरसां गणाः । एताल्लोकानवाप्नोति सां दत्त्वा वै युधिष्ठिर ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/३० ; येषामधिपतिः पूषा मारुतो बलवान् बली । ऐश्वर्ये वरुणो राजा नाममात्रं युगन्धराः ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/३१

12 कपिलानां सहस्रेण विधिदत्तेन पाण्डव । राजसूयफलं प्राप्य मम लोके महीयते । न तस्य पुनरावृत्तिर्विद्यते कुरुपुङ्गवः ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०४१, श्लोकक्रमाङ्कः ३

13 तस्मात् तु मुक्तिममन्विच्छन् दद्यात् तु कपिलां नरः ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०४०, श्लोकक्रमाङ्कः १०

14 महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०५३, श्लोकक्रमाङ्कः ३

15 नाकीर्तयित्वा गाः सुप्यात् तासां संस्मृत्य चैत्पतेत् । सायंप्रातर्नमस्येच्च गास्ततः पुष्टिमाप्नुयात् ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७८/१६ ; गाश्च संकीर्तयेन्नित्यम् । महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७८/१८

16 सरूपा बहुरूपाश्च विश्वरूपाश्च मातरः । प्राजापत्यमिति ब्रह्मन् जपेन्नित्यं यतव्रतः ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/३२

17 अध्यापयेरन् शिष्यान् वै गोमतीं यज्ञसम्मिताम् । त्रिरात्रोषितो भूत्वा गोमतीं लभते वरम् ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/४४

18 सरूपा बहुरूपाश्च विश्वरूपाश्च मातरः । महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/३२ ; तत्रैव, ८०/१२

19 आत्मानं मे मातृवच्चाश्रयन्तु ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७६/११

20 पितरो वृषभा ज्ञेया गावो लोकस्य मातरः । तासां तु पूजया राजन् पूजिताः पितृदेवताः ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०५२, श्लोकक्रमाङ्कः १४

21 यदा दीयते राजन् कपिला ह्यग्निहोत्रिणे । तदा च श्रृङ्गयोस्तस्या विष्णुरिन्द्रश्च तिष्ठतः ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०४३, श्लोकक्रमाङ्कः ०२

22 चन्द्रवज्रधरौ चापि तिष्ठतः श्रृङ्गमूलयोः । श्रृङ्गमध्ये तथा ब्रह्मा ललाटे गोर्वृषध्वजः ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०४३, श्लोकक्रमाङ्कः ०३

23 कर्णयोरश्विनौ देवौ चक्षुषी शशिभास्करौ । दन्तेषु मरुतो देवा जिह्वायां वाक् सरस्वती । रोमकूपेषु मुनयश्चर्मण्येव प्रजापतिः । निःश्वासेषु स्थिता वेदाः सषडङ्गपदक्रमाः ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०४३, श्लोकक्रमाङ्कः ०४

24 नासापुटे स्थिता गन्धाः पुष्पाणि सुरभीणि च । अधरे वसवः सर्वे मुखे चाग्निः प्रतिष्ठितः ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०४३, श्लोकक्रमाङ्कः ०५

25 साध्या देवाः स्थिताः कक्षे ग्रीवायां पार्वती स्थिता । पृष्ठे च नक्षत्रगणाः ककुद्देशे नभःस्थलम् । अपाने सर्वतीर्थानि गोमूत्रे जाह्नवी स्वयम् । अष्टैश्वर्यमयी लक्ष्मीर्गोमये वसते सदा ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०४३, श्लोकक्रमाङ्कः ०६

26 नासिकायां सदा देवी ज्येष्ठा वसति भामिनी । श्रोणीतटस्थाः पितरो रमा लाङ्गूलमाश्रिता ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०४३, श्लोकक्रमाङ्कः ०६

27 पार्श्वयोरुभयोः सर्वे विश्वेदेवाः प्रतिष्ठिताः । तिष्ठत्युरसि तासां तु प्रीतः शक्तिधरो गुहः । महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०४३, श्लोकक्रमाङ्कः ०७

28 जानुजङ्घोरुदेशेषु पञ्च तिष्ठन्ति वायवः । खुरमध्येषु गन्धर्वाः खुराग्रेषु च पन्नगाः ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०४३, श्लोकक्रमाङ्कः ०८

29 चत्वारः सागराः पूर्णास्तस्या एव पयोधराः । महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०४३, श्लोकक्रमाङ्कः ०९

30 महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०४३, श्लोकक्रमाङ्कः १०

31 रुद्रोपेताः सोमविष्यन्दभूताः ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७७/३१

32 ग्रासमुष्टिं परगवे दद्यात् संवत्सरं तु यः । अकृत्वा स्वयमाहारं प्राप्नस्तत् सार्वकालिकम् ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०५३, श्लोकक्रमाङ्कः २

33 द्रुह्येन्न मनसा वापि गोषु नित्यं सुखप्रदः । अर्चयेत सदा चैव नमस्कारैश्च पूजयेत् ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/३४

34 महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८०/०३

35 न ते परिभवः कार्यो गवामसुरसूदन । महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८३/८५

36 गा वै पश्याम्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा । गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम् ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७८/२४

37 महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०५६, श्लोकक्रमाङ्कः ०४

38 दृष्ट्वा तु कपिलां भक्त्या श्रुत्वा हुंकारनिःस्वनम् । व्यपोहति नरः पापमहोरात्रकृतं नृप ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०३९, श्लोकक्रमाङ्कः १२

39 गावः सुरभिगन्धिन्यास्तथा गुग्गुलुगन्धयः ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७८/०५

40 गवां मध्ये शुचिर्भूत्वा गोमतीं मनसा जपेत् । पूताभिरद्भिराचम्य शुचिर्भवति निर्मलः ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/४२

41 पवित्रमग्र्यं जगतः प्रतिष्ठा दिवौकसां मातरोऽथाप्रमेयाः । अन्वालभेद् दक्षिणतो व्रजेच्च दद्याच्च पात्रे प्रसमीक्ष्य कालम् ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८०/१०

42 महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/४१
न वोऽस्ति कुत्सितं किंचिदंगेष्वालक्ष्यतेऽनघाः । पुण्याः पवित्राः सुभगा ममादेशं प्रयच्छथ ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८२/२२

44 महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/०३

45 सभा प्रपा गृहाश्चापि देवतायतनानि च । शुद्ध्यन्ति शकृता यासां किं भूतमधिकं ततः ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०५३, श्लोकक्रमाङ्कः १

46 दान्तः प्रीतमना नित्यं गवां व्युष्टिं तथाश्नुते । त्र्यहमुष्णं पिबेन्मूत्रं त्र्यहमुष्णं पिबेत् पयः ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/३५

47 गवामुष्णं पयः पीत्वा त्र्यहमुष्णं घृतं पिबेत् । त्र्यहमुष्णं घृतं पीत्वा वायुभक्षो भवेत् त्र्यहम् ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/३६

48 इमाँल्लोकान् भरिष्यन्ति हविषा प्रस्रवेण च ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७७/२६

49 गवां रसात् परमं नास्ति किंचिद् । गवां प्रदानं सुमहद् वदन्ति ॥ महाभारतम् ,अनुशासनपर्वः , ,दानधर्मपर्वः ७१/५१

50 स वत्समुखविभ्रष्टो भवस्य भुवि तिष्ठतः । शिरस्यवाप तत् क्रुद्धः स तदैक्षत च प्रभुः । ललाटप्रभवेणाक्ष्णा रोहिणीं प्रदहन्निव ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७७/२०-२१

51 मृतेनावसिक्तस्त्वं नोच्छिष्टं विद्यते गवाम् । यथा ह्यमृतमादाय सोमो विस्यन्दते पुनः । तथा क्षीरं क्षरन्त्येता रोहिण्योऽमृतसम्भवम् ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७७/२४-२५ ; न दुष्यत्यनिलो नाग्निर्न सुवर्णं न चोदधिः । नामृतेनामृतं पीतं वत्सपीता न वत्सला ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७७/२५-२६

52 एतासां प्रीतिमायाति क्षीरेण तु वृषध्वजः । दध्ना च त्रिदशाः सर्वे घृतेन तु हुताशनः ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०४२, श्लोकक्रमाङ्कः १०

53 महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/३७

54 घृतेन जुहुयादग्निं घृतेन स्वस्ति वाचयेत् । घृतं प्राशेद् घृतं दद्याद् गवां पुष्टिं तथाश्नुते ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/३८

55 अन्नं हि परमं गावो देवानां परमं हविः । महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७८/०७

56 एवमेता महाभागा यज्ञियाः सर्वकामदाः । रोहिण्य इति जानीहि नैताभ्यो विद्यते परम् ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८१/४६

57 ऋते दधि घृतेनेह न यज्ञः सम्प्रवर्तते । तेन यज्ञस्य यज्ञत्वमतो मूलं च कथ्यते ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८३/०२ ; यज्ञांगं कथिता गावो यज्ञ एव च वासव । एताभिश्च विना यज्ञो न वर्तेत कथंचन ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८३/१७

58 महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७८/०७

59 महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७८/१७

60 महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७८/१९

61 श्लेष्ममूत्रपुरीषाणि प्रतिघातं च वर्जयेत् ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ७८/१९

62 कपिलापञ्चगव्येन यः स्नायात् तु शुचिर्नरः । स गङ्गाद्येषु तीर्थेषु स्नातो भवति पाण्डव ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०३९, श्लोकक्रमाङ्कः ११

63 सौम्ये मुहूर्ते तत् प्राश्य शुद्धात्मा शुद्धमानसः । क्रोधानृतविनिर्मुक्तो मद्गतेनान्तरात्मना ॥ महाभारतम्, आश्वमेधिकपर्वः, वैष्णवधर्मपर्वः, पृष्ठक्रमाङ्कः १०४२, श्लोकक्रमाङ्कः १४

64 अवश्यं मानना कार्या तवास्माभिर्यशस्विनि । शकृन्मूत्रे निवस त्वं पुण्यमेतद्धि नः शुभे ॥ महाभारतम्, अनुशासनपर्वः, दानधर्मपर्वः, ८२/२४

65 रघुवंशम्, २/२

66 https://www.amarujala.com/india-news/junagadh-agricultural-university-scientists-find-gold-in-gir-cow-urine

67 रघुवंशम्, ४४/२

68 रघुवंशम् ,१/७९

69 भक्तयोपपन्नेषु हि तद्विधानां प्रसादचिह्नानि पुरः फलानि । रघुवंशम्, २/२२

70 रघुवंशम्, २/६३

71 रघुवंशम्, २/१६